آيَاتُهَا ٢٢ ❀ سُوْرَةُ الْمُجَادِلَةِ (٥٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 22 — (58) सूरतुल मुजादिला — इख़्तिलाफ़ करने वाली — रुकूआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ تُجَادِلُكَ فِىْ زَوْجِهَا

अपने ख़ावन्द के बारे में	आप (स) से बहस करती थी	वह औरत जो	बात	सुन ली अल्लाह ने	यक़ीनन

وَتَشْتَكِىْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝١

1	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	तुम दोनों की गुफ़्तगू	सुनता था	और अल्लाह	अल्लाह	के पास	और शिकायत करती थी

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ

उन की माँएं	नहीं	उन की माँएं	वह नहीं	अपनी बीवियों से	तुम में से	ज़िहार करते हैं	जो लोग

اِلَّا الّٰۗـىِٕيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ

और झूट	बात से	नामाकूल	अलबत्ता कहते हैं	और बेशक वह	जिन्हों ने जना है उन्हें	सिर्फ़ वह औरतें

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ

फिर	अपनी बीवियों से	ज़िहार करते हैं	और जो लोग	2	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	और बेशक अल्लाह

يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ ذٰلِكُمْ

यह	कि एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	एक गुलाम	तो आज़ाद करना लाज़िम है	उस से जो उन्हों ने कहा (क़ौल)	वह रुजूअ करलें

تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٣ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

तो रोज़े	न पाए	तो जो कोई	3	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	उस से - की	तुम्हें नसीहत की जाती है

شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ

तो खाना खिलाए	उसे मक़्दूर न हो	फिर - जिस	कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	लगातार	दो महीने

سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह की हदें	और यह	और उस का रसूल	अल्लाह पर	यह इस लिए कि तुम ईमान रखो	मसाकीन को	साठ (60)

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	वह मुख़ालिफ़त करते हैं	जो लोग	बेशक	4	दर्दनाक अज़ाब	और न मानने वालों के लिए

كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ

वाज़ेह आयतें	और यक़ीनन हम ने नाज़िल कीं	उन से पहले	वह लोग जो	जैसे ज़लील किए गए	वह ज़लील किए जाएंगे

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ

तो वह उन्हें आगाह करेगा	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	5	ज़िल्लत का	अज़ाब	और काफ़िरों के लिए

بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦

6	निगरान	हर शै पर	और अल्लाह	और वह उसे भूल गए थे	उसे गिन रखा था अल्लाह ने	वह जो उन्हों ने किया

ع ١

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन अल्लाह ने उस औरत (ख़ौलह[र]) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बहस करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुनता था। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)
तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएं नहीं (हो जातीं), उन की माँएं वही हैं जिन्हों ने उन्हें जना है, और बेशक वह एक नामाकूल बात और झूट कहते हैं, और बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2)
और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) फिर वह अपने क़ौल से रुजूअ कर लें तो (उन पर) लाज़िम है आज़ाद करना एक गुलाम, इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (बाहम इख़्तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (3)
जो कोई (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (इख़्तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक़्दूर न हो तो साठ (60) मिस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (4)
बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील किए जाएंगे जैसे ज़लील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यक़ीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (5)
जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्हों ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफ़ूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ مَا يَكُوۡنُ مِنۡ

कोई	नहीं होती	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जानता है	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं देखा

نَّجۡوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمۡ وَلَا خَمۡسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمۡ وَلَاۤ اَدۡنٰى

और न (ख़ाह) कम	उन में छटा	मगर वह	पाँच की	और न	उन में चौथा	मगर वह	तीन लोगों में	सरगोशी

مِنۡ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكۡثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمۡ اَيۡنَ مَا كَانُوۡا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمۡ بِمَا عَمِلُوۡا

जो कुछ उन्हों ने किया	वह उन्हें बतला देगा	फिर	वह हों	जहां कहीं	उन के साथ	मगर वह	और न ज़ियादा	उस	से

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ۝٧ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ نُهُوۡا

वह जिन्हें मना किया गया	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा	7	जानने वाला	तमाम-हर शै का	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन

عَنِ النَّجۡوٰى ثُمَّ يَعُوۡدُوۡنَ لِمَا نُهُوۡا عَنۡهُ وَيَتَنٰجَوۡنَ بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ

और सरकशी	गुनाह से-की	वह बाहम सरगोशी करते हैं	उस से	जिस से मना किया गया उन्हें	वह (वही) करते हैं	फिर	सरगोशी से

وَمَعۡصِيَتِ الرَّسُوۡلِ ۖ وَاِذَا جَآءُوۡكَ حَيَّوۡكَ بِمَا لَمۡ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ

उस (लफ़्ज़) से अल्लाह ने	आप को दुआ नहीं दी	जिस से	आप को सलाम दुआ देते हैं	वह आते है आप (स) के पास	और जब	रसूल	और नाफ़रमानी

وَيَقُوۡلُوۡنَ فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ لَوۡلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوۡلُ ؕ حَسۡبُهُمۡ جَهَنَّمُ ۚ

जहन्नम	उन के लिए काफ़ी है	उस की जो हम कहते हैं	हमें अ़ज़ाब देता अल्लाह	क्यों नहीं	अपने दिलों में	वह कहते है

يَصۡلَوۡنَهَا ۚ فَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا تَنَاجَيۡتُمۡ

तुम बाहम सरगोशी करो	जब	ईमान वालो	ऐ	8	ठिकाना	सो बुरा	वह डाले जाएंगे उस में

فَلَا تَتَنَاجَوۡا بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَمَعۡصِيَتِ الرَّسُوۡلِ وَتَنَاجَوۡا

और सरगोशी करो	रसूल (स)	और नाफ़रमानी	और सरकशी	गुनाह की	तो सरगोशी न करो

بِالۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىۡۤ اِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ۝٩ اِنَّمَا النَّجۡوٰى

सरगोशी	इस के सिवा नहीं	9	तुम जमा किए जाओगे	उस की तरफ़-पास	वह जो	और अल्लाह से डरो	और परहेज़गारी	नेकी की

مِنَ الشَّيۡطٰنِ لِيَحۡزُنَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَيۡسَ بِضَآرِّهِمۡ شَيۡـًٔا اِلَّا

बग़ैर	कुछ	वह उन का बिगाड़ सकता	और नहीं	ईमान लाए	उन लोगों को जो	ताकि वह ग़मगीन करे	शैतान से

بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا

मोमिनों!	ऐ	10	मोमिन (जमा)	तो भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म के

اِذَا قِيۡلَ لَكُمۡ تَفَسَّحُوۡا فِى الۡمَجٰلِسِ فَافۡسَحُوۡا يَفۡسَحِ اللّٰهُ

कुशादगी बख़्शेगा अल्लाह	तो तुम खुल कर बैठ जाया करो	मज्लिसों में	तुम खुल कर बैठो	तुम्हें	जब कहा जाए

لَكُمۡ ۚ وَاِذَا قِيۡلَ انۡشُزُوۡا فَانۡشُزُوۡا يَرۡفَعِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

जो लोग ईमान लाए	बुलन्द कर देगा अल्लाह	तो उठ जाया करो	तुम उठ खड़े हो	और जब कहा जाए	तुम्हें

مِنۡكُمۡ ۙ وَالَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ۝١١

11	बाख़बर	तुम करते हो	उस से	और अल्लाह	दरजे	इल्म अ़ता किया गया	और जिन लोगों को	तुम में से

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और ख़ाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहां कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा क़ियामत के दिन जो कुछ उन्हों ने किया, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) बाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफ़ी है जहन्नम, वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8)

ऐ ईमान वालो! जब तुम बाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9)

इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को ग़मगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनों को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10)

ऐ मोमिनों! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मज्लिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़्शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अ़ता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ

पहले	तो तुम दे दो	रसूल (स)	तुम कान में बात करो	जब	मोमिनो	ऐ

نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	तुम न पाओ	फिर अगर	और ज़ियादा पाकीज़ा	बेहतर तुम्हारे लिए	यह	कुछ सदक़ा	अपनी सरगोशी

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ

अपनी सरगोशी	पहले	कि तुम दे दो	क्या तुम डर गए	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	तो क़ाइम करो तुम	तुम पर	और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने	तुम न कर सके	सो जब	सदक़ात

ع ٢ ٢ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	अल्लाह और उसका रसूल (स)	और तुम इताअ़त करो	और अदा करो ज़कात

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا

और न	तुम में से	न वह	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	उन लोगों से	जो लोग दोस्ती करते हैं	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा

مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	उनके लिए	तैयार किया अल्लाह ने	14	जानते हैं	हालांकि वह	झूट पर	और वह क़सम खा जाते हैं	उन में से

شَدِيْدًا ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

ढाल	अपनी क़समें	उन्हों ने बना लिया	15	वह करते थे	जो कुछ	बुरा	बेशक वह	सख़्त

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

उन से-को	हरगिज़ न बचा सकेंगे	16	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	तो उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	पस उन्हों ने रोक दिया

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۭ

दोज़ख़ वाले - जहन्नमी	यही लोग	कुछ-ज़रा	अल्लाह से	उन की औलाद	और न	उन के माल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ

उस के लिए	तो वह क़समें खाएंगे	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	17	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰي شَيْءٍ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ

वही	बेशक वह	याद रखो	किसी शै पर	कि वह	और वह गुमान करते हैं	तुम्हारे लिए-सामने	वह क़समें खाते हैं	जैसे

الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह की याद	तो उस ने उन्हें भुलादी	शैतान	उन पर	ग़ालिब आ गया	18	झूटे

اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	घाटा पाने वाले	वही	शैतान का गिरोह	बेशक	याद रखो	शैतान का गिरोह	यही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰۗىِٕكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

20	ज़लील तरीन लोग	में	यही लोग	और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की	जो लोग	बेशक

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदक़ा दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़दूर) न पाओ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर क़सम खा जाते हैं। (14)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, बेशक वह बुरे काम करते थे। (15)

उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया, पस उन्हों ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (16)

उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज़ ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)

जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) क़समें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! बेशक वही झूटे हैं। (18)

ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह हैं, खूब याद रखो, बेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

कौम (लोग)	तुम न पाओगे	21	ग़ालिब	क़वी	बेशक अल्लाह	और मेरे रसूल	मैं	मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा	लिख दिया (फ़ैसला कर दिया) अल्लाह

يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَاۗدُّوْنَ مَنْ حَاۗدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	जो - जिस	और दोस्ती रखते हों	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	वह ईमान रखते हैं

وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ اَوْ اَبْنَاۗءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ

यही लोग	उन का घराना	या	उन के भाई	या	उन के बेटे	या	उन के बाप दादा	वह हों	ख़ाह

كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	और वह दाख़िल करेगा उन्हें	अपने से	रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज़ से)	और उन की मदद की	ईमान	लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٣ ٣

22	कामयाब होने वाले	वही	अल्लाह का गिरोह	ख़ूब याद रखो कि बेशक	अल्लाह का गिरोह	यही लोग	उस से

آيَاتُهَا ٢٤ ❀ سُوْرَةُ الْحَشْرِ (٥٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (59) सूरतुल हश्र, जमा करना या होना — आयात 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ ۔ وقف النبي ﷺ

उन के घरों	से	अहले किताब	से - के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	निकाला	वही है जिस ने

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۭ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ

उन के क़िले	उन्हें बचा लेंगे	कि वह	और वह ख़याल करते थे	कि वह निकलेंगे	तुम्हें गुमान न था	पहले इज्तिमाए (लशकर) पर

مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ وَقَذَفَ

और उस ने डाला	उन्हें गुमान न था	जहां से	तो उन पर आया अल्लाह	अल्लाह से

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ

मोमिनों	और हाथों	अपने हाथों से	अपने घर	वह बरबाद करने लगे	रोब	उन के दिलों में

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

उन पर	अल्लाह ने लिख रखा होता	यह कि	और अगर न	2	ऐ आँखों वालो	तो तुम इब्रत पकड़ो

الْجَلَاۗءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾

3	जहन्नम का अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	दुनिया में	तो वह उन्हें अज़ाब देता	जिला वतन होना

फ़ैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, बेशक अल्लाह क़वी (तवाना) ग़ालिब है। **(21)** तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर कि वह उन से दोस्ती रखते हों जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, ख़ाह वह उन के बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंबे वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राज़ी, यही लोग हैं अल्लाह का गिरोह, ख़ूब याद रखो! अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो जहान में) कामयाब होने वाले हैं। **(22)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(1)** वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही इज्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह ख़याल करते थे कि उन के क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरबाद करने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। **(2)** और अगर अल्लाह ने उन पर जिला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अज़ाब देता, और उन के लिए आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब है। **(3)**

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की	और जो	और उस का रसूल (स)	उन्हों ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	इस लिए कि वह	यह

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً

खड़ा	तुम ने उस को छोड़ दिया	या	दरख़्त के तने	से	जो तुम ने काट डाले	4	सज़ा देने वाला	सख़्त

عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ

दिलवाया अल्लाह ने	और जो	5	नाफ़रमानों	और ताकि वह रुस्वा करे	तो अल्लाह के हुक्म से	उस की जड़ों पर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ

और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	ऊंट	और न	घोड़े	उन पर	तुम ने दौड़ाए थे	तो न	उन से	अपने रसूल (स) को

يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

6	कुदरत रखता है	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस पर वह चाहता है	पर	अपने रसूलों	मुसल्लत फ़रमा देता है

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ

तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए	बस्तियों वाले	से	अपने रसूल (स) को	जो दिलवादे अल्लाह

وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَىْ

ताकि	और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए

لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ

तो वह ले लो	रसूल (स)	तुम्हें अ़ता फ़रमाए	और जो	तुम में से-तुम्हारे	मालदारों	दरमियान	हाथों हाथ लेना (गर्दिश)	न रहे

وقف لازم
وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾

7	सख़्त सज़ा देने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	तो तुम बाज़ रहो	उस से	तुम्हें मना करे	और जिस

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ

और अपने मालों	अपने घरों से	वह जो निकाले गए	मुहाजिरों	मोहताजों के लिए

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और उस का रसूल	और वह मदद करते हैं अल्लाह की	और रज़ा	अल्लाह का-से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

और ईमान	इस घर	मुक़ीम रहे	और जो लोग	8	सच्चे	वह	और यही लोग

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِىْ صُدُوْرِهِمْ

अपने सीनों (दिलों)	में	और वह नहीं पाते	उन की तरफ़	हिज्रत की	जिस	वह मुहब्बत करते हैं	उन से क़ब्ल

حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

उन्हें	और ख़्वाह हो	अपनी जानों	पर	और वह तरजीह देते हैं	दिया गया उन्हें	उस की	कोई हाजत

خَصَاصَةٌ ۟ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٩﴾

9	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी ज़ात	बुख़्ल	बचाया	और जो-जिस	तंगी

यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह
और उस के रसूल (स) की
मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह
की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक
अल्लाह (उस को) सख़्त सज़ा देने
वाला है। (4)
जो तुम ने दरख़्तों के तने काट
डाले या उन्हें उन की जड़ों पर
खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह
के हुक्म से था और ताकि वह
नाफ़रमानों को रुस्वा कर दे। (5)
और अल्लाह ने अपने रसूल (स)
को उन (बनू नज़ीर) से जो (माल)
दिलवाया तो न तुम ने उन पर
घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट,
बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को
जिस पर चाहता है मुसल्लत
फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै
पर कुदरत रखता है। (6)
अल्लाह ने बस्तियों वालों से
जो (माल) अपने रसूल (स) को
दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है
और रसूल (स) के लिए और
(रसूल स के) क़राबतदारों के लिए,
और यतीमो और मिस्कीनों और
मुसाफ़िरों के लिए ताकि (दौलत) न
रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही)
गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स)
जो अ़ता फ़रमाएं वह ले लो, और
वह तुम्हें जिस से मना करें उस से
तुम बाज़ रहो, और तुम अल्लाह
से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा
देने वाला है। (7)
मोहताज मुहाजिरों के लिए (ख़ास
तौर पर) जो निकाले गए अपने
घरों से और अपने मालों से
(महरूम किए गए) वह अल्लाह का
फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा चाहते हैं
और वह मदद करते है अल्लाह और
उस के रसूल (स) की, यही लोग
सच्चे हैं। (8)
और जो लोग (अन्सार) ईमान
ला कर इस घर (दारुलहिज्रत मदीना)
में उन से क़ब्ल मुक़ीम हैं वह
(उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्हों ने
उनकी तरफ़ हिज्रत की, और जो
उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया गया
अपने दिलों में उस की कोई हाजत
नहीं पाते। और वह उन्हें तरजीह
देते हैं अपनी जानों पर ख़्वाह (ख़ुद)
उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस
ने अपनी ज़ात को बुख़्ल से बचाया
तो यही लोग फ़लाह पाने वाले
हैं। (9)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

और हमारे भाइयों को	हमें बख़्शदे	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	उन के बाद	वह आए	और जो लोग

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ

उन लोगों के लिए जो	कोई कीना	हमारे दिलों में	और न होने दे	ईमान में	हम से सबक़त की	वह जिन्हों ने

اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ع ١٠

वह लोग जिन्हों ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक़)	तरफ़-को	क्या आप ने नहीं देखा	10	रहम करने वाला	शफ़क़त करने वाला	बेशक तू	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए

يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ

अलबत्ता अगर	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अपने भाइयों को	वह कहते हैं

اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ

और अगर	कभी	किसी का	तुम्हारे बारे में	और हम न मानेंगे	तुम्हारे साथ	तो हम ज़रूर निकल जाएंगे	तुम निकाले गए

قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا

वह जिला वतन किए गए	अगर	11	अलबत्ता झूटे हैं	बेशक वह	गवाही देता है	और अल्लाह	तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे	तुम से लड़ाई हुई

لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ

वह उन की मदद करेंगे	और अगर	वह उन की मदद न करेंगे	उन से लड़ाई हुई	और अगर	उन के साथ	वह न निकलेंगे

لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً

डर	बहुत ज़ियादा	यक़ीनन तुम-तुम्हारा	12	वह मदद न किए जाएंगे	फिर	पीठ (जमा)	तो वह यक़ीनन फेरेंगे

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

13	कि वह समझते नहीं	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अल्लाह से	उन के सीनों (दिलों) में

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ

पीछे से	या	क़िला बन्द	बस्तियों में	मगर	इकटठे सब मिल कर	वह तुम से न लड़ेंगे

جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ

हालांकि उन के दिल	तुम गुमान करते हो उन्हें इकटठे	बहुत सख़्त	उन के आपस में	उन की लड़ाई	दीवारें

شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ

जो लोग	हाल जैसा	14	वह अक़्ल नहीं रखते	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अलग अलग

مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

अज़ाब	और उन के लिए	अपने काम	वबाल	उन्हों ने चख लिया	क़रीबी ज़माना	इन से क़ब्ल

اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ

तो जब उस ने कुफ़्र किया	तू कुफ़्र इख़्तियार कर	इन्सान से	उस ने कहा	जब	शैतान	हाल जैसा	15	दर्दनाक

قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

16	तमाम जहानों	रब	अल्लाह	तहक़ीक़ मैं डरता हूँ	तुझ से	लातअ़ल्लुक़	बेशक मैं	उस ने कहा

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख़्श दे वह जिन्हों ने ईमान लाने में हम से सबक़त की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! बेशक तू शफ़क़त करने वाला, रहम करने वाला। (10)

क्या आप (स) ने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफ़िर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह झूटे हैं। (11)

और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निकलेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यक़ीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। (12)

यक़ीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। (13)

वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर बस्तियों में क़िला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उन की लड़ाई बहुत सख़्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अ़क़्ल नहीं रखते। (14)

इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़ब्ल हुए, उन्हों ने अपने काम का वबाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (15)

शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़्र इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़्र किया तो उस ने कहा: बेशक मैं तुझ से लातअ़ल्लुक़ हूँ, तहक़ीक़ मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। (16)

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ

और यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	आग में	बेशक वह दोनों	उन दोनों का अन्जाम	पस हुआ

ع ٢ ٧ ٥ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ

और चाहिए कि देखे	तुम अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ	17	ज़ालिमों	जज़ा-सज़ा

نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ

बाख़बर	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	कल के लिए	क्या उस ने आगे भेजा	हर शख़्स

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें	जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया	उन लोगों की तरह	और न हो जाओ तुम	18	उस से जो तुम करते हो

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ

दोज़ख़ वाले	बराबर नहीं	19	नाफ़रमान (जमा)	वह	यही लोग	खुद उन्हें

وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वही हैं	जन्नत वाले	और जन्नत वाले

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

दबा हुआ	तो तुम देखते उस को	पहाड़ पर	क़ुरआन	यह	अगर हम नाज़िल करते

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا

हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	अल्लाह का ख़ौफ़	से	टुकड़े टुकड़े हुआ

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह	21	ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

22	रहम करने वाला	वह बड़ा मेहरबान	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा का	उस के सिवा

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ

सलामती वाला	निहायत पाक	बादशाह	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह

الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

पाक है अल्लाह	बड़ाई वाला	जब्बार	ग़ालिब	निगहबान	अम्न देने वाला

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

ईजाद करने वाला	ख़ालिक़	वह अल्लाह	23	वह शरीक करते हैं	उस से जो

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

उस की	पाकीज़गी बयान करता है	अच्छे	नाम (जमा)	उस के लिए	सूरतें बनाने वाला

ع ٣ ٧ ٦ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

24	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख़्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है! और तुम अल्लाह से डरो, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18)

और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्हों ने खुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19)

बराबर नहीं दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

अगर हम नाज़िल करते यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (21)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हक़ीक़ी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है। सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23)

वह अल्लाह है - ख़ालिक़, इजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (24)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ़ दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक़ आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला वतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ़ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैग़ाम), और मैं ख़ूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहक़ीक़ वह सीधे रास्ते से भटक गया। **(1)**

अगर वह तुम्हें पाएं (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़बानें (दस्तदराज़ी और ज़बान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। **(2)**

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। **(3)**

बेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्हों ने अपनी क़ौम को कहा: बेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अ़दावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ़ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। **(4)**

آيَاتُهَا ١٣ ❀ سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ (٦٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 13 — (60) सूरतुल मुमतहिना — रुकुआ़त 2

जिस (औरत) की जाँच करनी है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ

तुम पैग़ाम भेजते हो	दोस्त	और अपने दुश्मन	मेरा दुश्मन	तुम न बनाओ	ईमान वालो	ऐ

اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ

वह निकालते (जिला वतन करते) हैं रसूल (स) को	हक़ से	उस के जो तुम्हारे पास आया	और वह मुन्किर हो चुके हैं	दोस्ती से-का	उन की तरफ़

وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِیْ سَبِيْلِیْ

मेरे रास्ते में	जिहाद के लिए	तुम निकलते हो	अगर	तुम्हारा रब	अल्लाह पर	कि तुम ईमान लाते हो	और तुम्हें भी

وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِیْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ

और जो	तुम छुपाते हो	वह जो	और मैं ख़ूब जानता हूँ	दोस्ती का पैग़ाम	उन की तरफ़	तुम छुपा कर (भेजते हो)	मेरी रज़ा	और चाहने के लिए

اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ

अगर	1	रास्ता	सीधा	वह भटक गया	तो तहक़ीक़	तुम में से	यह करेगा	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो

يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ

और अपनी ज़बानें	अपने हाथ	तुम पर	और वह खोलें	दुश्मन	तुम्हारे	वह हो जाएं	वह तुम्हें पाएं

بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ

तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे रिश्ते	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे	2	काश तुम काफ़िर हो जाओ	और वह चाहते हैं	बुराई के साथ

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक है	3	देखता है	जो तुम करते हो	और अल्लाह	वह (अल्लाह) फ़ैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान	क़ियामत के दिन

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ

अपनी क़ौम को	जब उन्हों ने कहा	उस के साथ	और जो	इब्राहीम (अ)	में	चाल (नमूना) बेहतरीन

اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا

हमारे दरमियान	और ज़ाहिर हो गई	तुम्हारे	हम मुन्किर हैं	अल्लाह के सिवा	तुम बन्दगी करते हो	और उन से जिन की	तुम से	बेशक हम लातअ़ल्लुक़

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ

वाहिद	अल्लाह पर	तुम ईमान ले आओ	यहां तक कि	हमेशा के लिए	और बुग़्ज़ (दुश्मनी)	अ़दावत	और तुम्हारे दरमियान

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से-के आगे	तुम्हारे लिए	मैं इख़्तियार रखता	और नहीं	तुम्हारे लिए	अलबत्ता मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा	अपने बाप से	इब्राहीम (अ)	मगर कहना

مِنْ شَیْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④

4	वापसी	और तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ़ किया	और तेरी तरफ़	हम ने भरोसा किया	तुझ पर	ऐ हमारे रब	कुछ भी

معانقة ١٦ عند المتأخرين ١٢
السباع الوقف على القيمة ١٢

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

तू ही	बेशक तू	ऐ हमारे रब	हमें	और बख़्श दे	कुफ़्र किया (काफ़िर)	उन के लिए जिन्हों ने	आज़माइश (तख़्तए मश्क़)	हमें न बना	ऐ हमारे रब

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا

उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	बेहतरीन	चाल (नमूना)	उन में	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ (यक़ीनन) है	5	हिक्मत वाला	ग़ालिब

ع ١ ٦ ٧ اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

6	सतौदा सिफ़ात	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	रूगर्दानी करेगा	और जो-जिस	और आख़िरत का दिन	अल्लाह

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ

दोस्ती	उन से	तुम अ़दावत रखते हो	उन लोगों के	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	वह कर दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ

जो लोग	से	तहक़ीक़ मना नहीं करता अल्लाह	7	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	क़ुदरत रखने वाला	और अल्लाह

لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ

कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे घर (जमा)	से	और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला	दीन में	तुम से नहीं लड़ते

وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

से	तुम्हें मना करता है अल्लाह	इस के सिवा नहीं	8	इंसाफ़ करने वाले	महबूब रखता है	बेशक अल्लाह	उन से	और तुम इंसाफ़ करो

الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا

और उन्हों ने मदद की	तुम्हारे घर	से	और उन्हों ने तुम्हें निकाला	दीन में	तुम से लड़ें	जो लोग

عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

9	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	और जो उन से दोस्ती रखेगा	कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे निकालने पर

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ

तो उन का इम्तिहान कर लिया करो	मुहाजिर औरतें	मोमिन औरतें	जब तुम्हारे पास आएं	ईमान वालो	ऐ

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ

तो तुम उन्हें वापस न करो	मोमिन औरतें	तुम उन्हें जान लो	पस अगर	उन के ईमान को	अल्लाह ख़ूब जानता है

اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ

तुम उन को देदो	उन औरतों के लिए	वह हलाल हैं	और न वह मर्द	उन के लिए	हलाल	वह औरतें नहीं	काफ़िरों	तरफ़

مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो	तुम पर	और कोई गुनाह नहीं	जो उन्हों ने ख़र्च किया

وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔـلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔـلُوْا

और चाहिए कि वह मांग लें	जो तुम ने ख़र्च किया	और तुम मांग लो	काफ़िर औरतें	शादी की रिश्ता	और तुम न क़ब्ज़ा रखो

مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

10	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दरमियान	वह फ़ैसला करता है	अल्लाह का हुक्म	यह	जो उन्हों ने ख़र्च किया

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ित्ना काफ़िरों के लिए और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब! बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)
यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूगर्दानी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)
क़रीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (7)
अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़े और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)
इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे) में लड़े और उन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (9)
ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएं तो उन का इम्तिहान कर लिया करो, अल्लाह ख़ूब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं हैं उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औरतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफ़िर शोहरों) को देदो जो उन्हों ने ख़र्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औरतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़्फ़ार से) मांग लो जो तुम ने ख़र्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

पस दो	तो उन (कुफ़्फ़ार) को सज़ा दो	कुफ़्फ़ार की तरफ़	तुम्हारी बीवियां	से	कोई	तुम्हारे हाथ से निकल जाए	और अगर

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

वह जिस	और डरो अल्लाह से	जो उन्हों ने ख़र्च किया	उस क़द्र	उन की औरतें	जाती रहीं	उन को जिन की

اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ

आप से बैअ़त करने के लिए	मोमिन औरतें	आप के पास आएं	जब	ऐ नबी (स)	11	ईमान रखते हो	उस पर	तुम

عَلٰٓي اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ

और न ज़िना करेंगी	और न चोरी करेंगी	किसी शै को	अल्लाह के साथ	वह शरीक न करेंगी	इस पर कि

وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ

जो उन्हों ने गढ़ा हो	बुहतान से	और न लाएंगी	अपनी औलाद	और न वह क़त्ल करेंगी

بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें	नेक कामों में	और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी	और अपने पाऊँ	अपने हाथों के दरमियान

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान वालो	ऐ	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह से	और मग़्फ़िरत मांगें

لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا مِنَ

से	वह ना उम्मीद हो चुके	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	वह लोग	तुम दोस्ती न रखो

الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع النصف ع ٢ ٨

13	क़ब्रों वाले (मुर्दे)	से	काफ़िर (जमा)	मायूस हैं	जैसे	आख़िरत

آيَاتُهَا ١٤ ❀ سُوْرَةُ الصَّفِّ (٦١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (61) सूरतुस सफ़ — सफ़ (मोरचा बंदी) — आयात 14

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا

नापसंदीदा	बड़ी	2	तुम करते नहीं	जो	तुम कहते हो	क्यों	ईमान वालो	ऐ

عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	3	तुम करते नहीं	जो	तुम कहो	कि	अल्लाह के नज़्दीक

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾

4	सीसा पिलाई हुई	एक इमारत	गोया कि वह	सफ़ बस्ता हो कर	उस के रास्ते में	जो लोग लड़ते हैं

और अगर कुफ़्फ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुफ़्फ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आगईं उन के मेहर वापस देने के बजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रहीं, जिस क़द्र उन्हों ने ख़र्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएं मोमिन औरतें इस पर बैअ़त करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शै को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्हों ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2)

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। (3)

बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत हैं सीसा पिलाई हुई। (4)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ

कि मैं	और यक़ीनन तुम जान चुके हो	तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	उन के दिल	अल्लाह ने कज कर दिए	उन्हों ने कज रवी की	पस जब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ

बेशक मैं	ऐ बनी इस्राईल	मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	और जब	5	नाफ़रमान (जमा)	लोग

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا

और ख़ुशख़बरी देने वाला	तौरेत	से	मुझ से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वाज़ेह दलाइल के साथ	वह आए उन के पास	फिर जब	अहमद	उस का नाम	मेरे बाद	वह आएगा	एक रसूल की

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ

और वह	झूट	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	6	खुला जादू	यह

يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ۚ٧ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	7	ज़ालिम लोगों	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	इस्लाम की तरफ़	बुलाया जाता है

لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨

8	काफ़िर नाख़ुश हों	और ख़ाह	अपना नूर	पूरा करने वाला	और अल्लाह	अपने फूंकों से	अल्लाह का नूर	कि बुझादें

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

दीन पर	ताकि वह उसे ग़ालिब करदे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	वही जिस ने भेजा

ع ١ ٩ ٩ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ۧ٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ

तिजारत पर	मैं तुम्हें बतलाऊँ	क्या	ईमान वालो	ऐ	9	मुश्रिक (जमा)	और ख़ाह नाख़ुश हों	तमाम

تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ

और तुम जिहाद करो	और उसका रसूल (स)	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	10	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	तुम्हें नजात दे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	यह	और अपनी जानों	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ۙ١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे से	जारी हैं	बाग़ात	और वह तुम्हें दाख़िल करेगा	तुम्हारे गुनाह	तुम्हें	वह बख़्श देगा	11	तुम जानते हो

الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ۙ١٢

12	बड़ी	कामयाबी	यह	हमेशा	बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	नहरें

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣

13	और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दें	क़रीब	और फ़तह	अल्लाह से	मदद	तुम उसे बहुत चाहते हो	और एक और

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यक़ीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्हों ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5)

और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तस्दीक़ करने वाला जो मुझ से पहले तौरेत (आई) और एक रसूल (स) की ख़ुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्हों ने कहा यह तो खुला जादू है। (6)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7)

वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूंकों से बुझादें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है ख़ाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और ख़ाह मुश्रिक नाख़ुश हों। (9)

ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से नजात दे। (10)

तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11)

वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बाग़ात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12)

और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और क़रीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को ख़ुशख़बरी दीजिए। (13)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	जैसे	अल्लाह के मददगार	तुम हो जाओ	ईमान वालो	ऐ

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

अल्लाह के मददगार	हम	हवारिय्यों	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरा मददगार	कौन	हवारिय्यों को

فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ

एक गिरोह	और कुफ़्र किया	बनी इस्राईल	से-का	एक गिरोह	तो ईमान लाया

فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع ٢ ٥ ١٠

14	ग़ालिब	सो वह हो गए	उन के दुश्मनों पर	ईमान वाले	तो हम ने मदद की

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ (٦٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (62) सूरतुल जुमुअ़ह जुमा — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	कमाल पाक	बादशाह हक़ीक़ी	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो कुछ	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ

उस की आयतें	उन्हें	पढ़ कर सुनाता है	उन में से	एक रसूल (स)	अनपढ़ों में	उठाया (भेजा)	वही जिस ने	1	हिक्मत वाला

وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

अलबत्ता गुमराही में	इस से क़ब्ल	और तहक़ीक़ वह थे	हिक्मत (दानिशमन्दी की बातें)	किताब	और उन्हें सिखाता है	और वह उन्हें पाक करता है

مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ

यह	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उन से	कि वह अभी नहीं मिले	उन के	और अ़लावा	2	खुली

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ

मिसाल	4	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	वह चाहता है	जिस को	वह देता है उसे	अल्लाह का फ़ज़्ल

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ

किताबें	वह लादे हुए है	गधा	मिसाल की तरह	उन्हों ने न उठाया उसे	फिर	तौरात	उन पर लादी गई	जिन लोगों पर

بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	अल्लाह की आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	जिन्हों ने	वह लोग	मिसाल (हालत)	बुरी

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ

कि तुम	तुम्हें ज़अ़्म (घमंड) है	अगर	यहूदियो	ऐ	आप (स) फ़रमा दें	5	ज़ालिम लोगों

اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾

6	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम तमन्ना करो	दूसरे लोगों के अ़लावा	से	अल्लाह के लिए	दोस्त

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ) के बेटे इसा (अ) ने हवारिय्यों को कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरा मददगार? तो कहा हवारिय्यों ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और कुफ़्र किया एक गिरोह ने, तो हम ने उन के दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद की, सो वह ग़ालिब हो गए। (14)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है, जो बादशाह हक़ीक़ी, कमाल दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (1)

वही है जिस ने अनपढ़ों में एक रसूल (स) उन ही में से भेजा, वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से) पाक करता है और उन्हें सिखाता है किताब और दानिशमन्दी की बातें, और बेशक यह लोग उस से पहले खुली गुमराही में थे। (2)

और उन के अ़लावा (उन को भी) जो अभी उन से नहीं मिले, वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (3)

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिस को चाहता है उसे देता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (4)

उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरेत लादी (उतारी) गई, फिर उन्हों ने उसे उठाया गधे की तरह जो किताबें लादे हुए है (उस पर कारबन्द न हुए), उन लोगों की हालत बुरी है जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के अ़लावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो। (6)

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧

7	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के हाथों ने	भेजा आगे	उसके सबब जो	कभी भी	और वह उस की तमन्ना न करेंगे

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

तुम लौटाए जाओगे	फिर	तुम्हें मिलने वाली	तो बेशक वह	उस से	तुम भागते हो	जिस से	बेशक मौत	आप (स) फ़रमादें

ع ١ ١١ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ۧ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	8	तुम करते थे	उस से जो	फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा	और ज़ाहिर	तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى

तरफ़	तो तुम लपको	जुमा का दिन	से-की	नमाज़ के लिए	पुकारा जाए	जब	ईमान वालो

ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا

फिर जब	9	तुम जानते हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	ख़रीद ओ फ़रोख़्त	और तुम छोड़ दो	अल्लाह की याद

قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	से	और तुम तलाश करो	ज़मीन में	तो तुम फैल जाओ	नमाज़	पूरी हो चुके

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً

तिजारत	वह देखते हैं	और जब	10	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकस्रत	और तुम याद करो अल्लाह को

اَوْ لَهْوَا نِ انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	जो	फ़रमा दें	खड़ा	और आप (स) को छोड़ जाते हैं	उस की तरफ़	वह दौड़ जाते हैं	खेल तमाशा	या

ع ٢ ٣ ١٢ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ۧ

11	रिज़्क़ देने वाला	बेहतर	और अल्लाह	तिजारत	और से	खेल तमाशा	से	बेहतर

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ (٦٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (63) सूरतुल मुनाफ़िक़ून — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

वह जानता है	और अल्लाह	अलबत्ता अल्लाह के रसूल	बेशक आप (स)	हम गवाही देते हैं	वह कहते हैं	मुनाफ़िक़	जब आप (स) के पास आते हैं

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١ۚ اِتَّخَذُوْٓا

उन्हों ने पकड़ा (बना लिया)	1	अलबत्ता झूटे	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	गवाही देता है	और अल्लाह	अलबत्ता उसके रसूल (स)	यक़ीनन आप (स)

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢

2	वह करते हैं	बुरा जो	बेशक वह	अल्लाह का रास्ता	से	पस वह रोकते हैं	ढाल	अपनी क़समों को

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٣

3	नहीं समझते	पस वह	उन के दिल	पर	तो मुहर लगादी गई	फिर उन्हों ने कुफ़्र किया	ईमान लाए	इस लिए कि वह	यह

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (7)

आप (स) फ़रमा दें: बेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यक़ीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8)

ऐ ईमान वालो! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़े (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और ख़रीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9)

फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10)

और जब वह देखते हैं तिजारत या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशे से और तिजारत से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1)

उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2)

यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्हों ने कुफ़्र किया तो मुहर लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

गोया कि वह	उन की बातें	आप सुनें	और अगर वह बात करें	उन के जिस्म	तो आप को ख़ुशनुमा मालूम हों	आप (स) उन्हें देखें	और जब

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ

पस आप (स) उन से बचें	दुश्मन	वह	अपने ऊपर	हर बुलन्द आवाज़	वह गुमान करते हैं	दीवार से लगाई हुई	लकड़ियां

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बख़्शिश की दुआ करें	तुम आओ	कहा जाए उन से	और जब	4	वह फिरे जाते हैं	कहां	उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह

رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾

5	बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं	और वह	वह रुकते हैं	और आप (स) उन्हें देखें	अपने सरों को	वह फेर लेते हैं	अल्लाह के रसूल

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ

उन को	हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	उन के लिए	आप (स) न बख़्शिश मांगें	या	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	उन पर	बराबर

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا

न ख़र्च करो तुम	वह कहते हैं	वह लोग जो	वही	6	नाफ़रमान लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए ख़ज़ाने	वह मुन्तशिर हो जाएं	यहां तक कि	अल्लाह के रसूल	पास	जो	पर

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ

अगर हम लौट कर गए	वह कहते हैं	7	वह नहीं समझते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और ज़मीन

اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ

और उसके रसूल (स) के लिए	और अल्लाह के लिए इज़्ज़त	निहायत ज़लील	वहां से	इज़्ज़तदार	ज़रूर निकाल देगा	मदीने की तरफ़

وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ١ ١٣

ईमान वालो	ऐ	8	नहीं जानते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और मोमिनों के लिए

لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करेगा	और जो	अल्लाह की याद	से	और न तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	जो हम ने तुम्हें दिया	से	और तुम ख़र्च करो	9	ख़सारा पाने वाले	वह	तो वही लोग

اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰۤى

तक	तू ने मुझे मोहलत दी	क्यों न	ऐ मेरे रब	तो वह कहे	मौत	तुम में से किसी को	कि आजाए

اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ

और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह	10	नेकोकारों	से	और मैं होता	तो मैं सदक़ा करता	एक क़रीब की मुद्दत

نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ٢ ٣ ١٤

11	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	और अल्लाह	उस की अजल	जब आगई	किसी को

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को ख़ुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (ग़ौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)

और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरों को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं। (5)

उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शीश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)

वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)

वह कहते हैं: अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़्ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)

और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से ख़र्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक क़रीबी मुद्दत तक मोहलत न दी? तो मैं सदक़ा करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)

और जब उस की अजल आगई तो अल्लाह हरगिज़ किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

آيَاتُهَا ١٨ ❀ سُوْرَةُ التَّغَابُنِ (٦٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (64) सूरतुत तग़ाबुन — हार जीत | आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

और उसी के लिए	बादशाही	उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

तुम्हें पैदा किया	वही जिस ने	1	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	तमाम तारीफ़ें

فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢

2	देखने वाला	तुम करते हो	उस को जो	और अल्लाह	कोई मोमिन	और तुम में से	कोई काफ़िर	तो तुम में से

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

तुम्हें सूरतें दीं	तो बहुत अच्छी	और तुम्हें सूरतें दीं	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ

और जानता है	और ज़मीन	आस्मानो में	जो	वह जानता है	3	वापसी	और उसी की तरफ़

مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤

4	दिलों के भेद	जानने वाला	और अल्लाह	और जो तुम ज़ाहिर करते हो	जो तुम छुपाते हो

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ

अपने काम	वबाल	तो उन्हों ने चख लिया	इस से क़ब्ल	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	ख़बर	क्या नहीं आई तुम्हारे पास

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

उन के रसूल	आते थे उनके पास	इस लिए कि वह	यह	5	अ़ज़ाब दर्दनाक	और उन के लिए

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

और बेनियाज़ी फ़रमाई	और वह फिर गए	तो उन्हों ने कुफ़्र किया	वह हिदायत देते हैं हमें	क्या बशर	तो वह कहते	वाज़ेह निशानियों के साथ

اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ

वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे	कि	वह काफ़िर हुए	उन लोगों ने जो	दावा किया	6	सतौदा सिफ़ात	बेनियाज़	और अल्लाह	अल्लाह

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ

जो तुम करते थे	फिर अलबत्ता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा	अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे	मेरे रब की क़सम	हाँ	फ़रमा दें

وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस के रसूल (स)	अल्लाह पर	पस तुम ईमान लाओ	7	आसान	अल्लाह पर	और यह

وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

8	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	हम ने नाज़िल किया	वह जो	और नूर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है बादशाही और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (1)

वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2)

उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3)

वह जानता है जो कुछ आस्मानो में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4)

क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्हों ने इस से पहले कुफ़्र किया, तो उन्हों ने वबाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5)

यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थे: क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्हों ने कुफ़्र किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हम्द) है। (6)

उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7)

पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (8)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	वह ईमान लाए	और जो	खोने या पाने (हार जीत) का दिन	यह	जमा होने (क़ियामत) के दिन	वह जमा करेगा तुम्हें	जिस दिन

وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

जारी हैं	बाग़ात	और वह उसे दाख़िल करेगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अच्छे	और वह काम करे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾

9	बड़ी कामयाबी	यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

उस में	हमेशा रहेंगे	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और उन्हों ने झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٠﴾ ع مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ ع ١٠ ١٥

और जो	अल्लाह के इज़्न से	मगर	कोई मुसीबत	नहीं पहुँची	10	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी

يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

और तुम इताअ़त करो अल्लाह की	11	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उस का दिल	हिदायत देता है	अल्लाह पर	वह ईमान लाता है

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾

12	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	हमारे रसूल (स) पर-ज़िम्मे	तो इस के सिवा नहीं	फिर गए तुम	फिर अगर	और इताअ़त करो रसूल (स) की

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	13	ईमान वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ

पस तुम उन से बचो	तुम्हारे लिए	दुश्मन	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारी बीवियां	से	बेशक	ईमान वालो

وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَآ

इस के सिवा नहीं	14	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और तुम बख़्श दो	और तुम दरगुज़र करो	तुम माफ़ कर दो	और अगर

اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

पस तुम डरो अल्लाह से	15	बड़ा अजर	उस के पास	और अल्लाह	आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल

مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ

तुम्हारे हक़ में	बेहतर	और तुम ख़र्च करो	और तुम इताअ़त करो	और तुम सुनो	जहां तक तुम से हो सके

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ

अगर	16	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी जान	बख़ीली	बचा लिया गया	और जो

تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	और वह तुम्हें बख़्श देगा	तुम्हारे लिए	वह उसे दो चन्द करेगा	क़र्ज़ हस्ना	तुम क़र्ज़ दोगे अल्लाह को

شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ لا عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ع ع ٢ ٨ ١٦

18	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और ज़ाहिर	ग़ैब का जानने वाला	17	बुर्दबार	क़द्र शनास

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)

कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज़्न से, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (11)

और तुम अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)

अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)

ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ बीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)

पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताअ़त करो और ख़र्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की बख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)

अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़ हस्ना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें बख़्शदेगा, और अल्लाह क़द्र शनास, बुर्दबार है। (17)

(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

آيَاتُهَا ١٢ ❀ سُوْرَةُ الطَّلَاقِ (٦٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 | (65) सूरतुत तलाक़ | आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

और तुम शुमार रखो	उन की इद्दत के लिए	तो उन्हें तलाक़ दो	औरतों	तुम तलाक़ दो	जब	ऐ नबी (स)

الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

और न वह (ख़ुद) निकलें	उन के घरों	से	तुम न निकालो उन्हें	तुम्हारा रब	और तुम डरो अल्लाह से	इद्दत

اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ

आगे निकलेगा	और जो	अल्लाह की हुदूद	और यह	खुली	बेहयाई	यह कि वह करें	मगर

حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद	वह पैदा कर दे	मुमकिन है कि अल्लाह	तुम्हें ख़बर नहीं	अपनी जान	तो तहक़ीक़ उस ने ज़ुल्म किया	अल्लाह की हुदूद

اَمْرًا ① فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ

तुम उन्हें जुदा कर दो	या	अच्छे तरीक़े से	तो उन को रोक लो	अपनी मीआ़द	वह पहुँच जाएं	फिर जब	1	कोई और बात

بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ

यही है	गवाही अल्लाह के लिए	और तुम क़ाइम करो	अपने में से	दो (2) इंसाफ़ पसंद	और तुम गवाह कर लो	अच्छे तरीक़े से

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

वह अल्लाह से डरता है	और जो	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	जो ईमान रखता है	जिस की नसीहत की जाती है

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ② وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ

वह भरोसा करता है	और जो	उसे गुमान नहीं होता	जहां से	और वह उसे रिज़्क़ देता है	2	नजात की राह	वह उस के लिए निकाल देता है

عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

3	अन्दाज़ा	हर बात के लिए	बेशक कर रखा है अल्लाह	अपना काम	पहुँचने (पूरा करने) वाला	बेशक अल्लाह	उस के लिए काफ़ी है	तो वह	अल्लाह पर

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ

तो उन की इद्दत	अगर तुम्हें शुबाह हो	तुम्हारी बीवियां	से	हैज़	से	ना उम्मीद हो गईं हों	और जो औरतें

ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ

कि वज़्अ़ हो जाएं	उन की इद्दत	और हम्ल वालियां	उन्हें हैज़ नहीं आया	और जो	महीने	तीन

حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ④ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के हुक्म	यह	4	आसानी	उस के काम में	उस के लिए	वह कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	उन के हम्ल

اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ⑤

5	अजर	उस को	और बड़ा देगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	तुम्हारी तरफ़	उस ने यह उतारा है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इद्दत के लिए तलाक़ दो और तुम इद्दत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह ख़ुद निकलें, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुरतकिब हों, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहक़ीक़ उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम्हें ख़बर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुजूअ़ की) कोई और बात (सबील) पैदा कर दे। (1) फिर जब वह पहुँच जाएं अपनी मीआ़द तो उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से जुदा (रुख़्सत) कर दो, और अपने में से दो (2) इंसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख़्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़्लिसी) की राह निकाल देता है। (2) और वह उसे रिज़्क़ देता है जहां से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर बात के लिए अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है। (3) और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गईं हों तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और (यही हुक्म कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हम्ल वालियों की इद्दत उन के वज़्अ़ हम्ल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4) यह अल्लाह के हुक्म हैं, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए ज़रर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हम्ल से हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि वज़्अ़ हम्ल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी ख़ातिर) दूध पिलाएं तो उन्हें उन की उज्रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीक़े से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम बाहम कश्मकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। **(6)** चाहिए कि वस्अ़त वाला अपनी वस्अ़त के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़्क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से ख़र्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द्र) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। **(7)** और कित्नी ही बस्तियां हैं जिन्हों ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अ़ज़ाब दिया। **(8)** फिर उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। **(9)** अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अ़क़्ल वालो - ईमान वालो! तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। **(10)** और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा तो वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। **(11)** अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। **(12)**

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا

कि तुम तंग करो	और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ	अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़	तुम रहते हो	जहां	तुम उन्हें रखो

عَلَيْهِنَّ ۭ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ

उन के हम्ल	यहां तक कि वज़्अ़ हो जाएं	उन पर	तो ख़र्च करो तुम	हम्ल वालियां (हम्ल से)	वह हों	और अगर	उन्हें

فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ

और अगर	माकूल तरीक़े से	और तुम बाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में	उन की उज्रत	तो तुम उन्हें दो	तुम्हारे लिए	वह दूध पिलाएं	फिर अगर

تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۝٦ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَمَنْ

और जो	अपनी वस्अ़त	से - मुताबिक़	वस्अ़त वाला	चाहिए कि ख़र्च करे	6	कोई दूसरी	उस को	तो दूध पिलादेगी	तुम बाहम कश्मकश करोगे

قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۭ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۭ

जिस क़द्र उस ने उसे दिया	मगर	किसी को	तकलीफ़ नहीं देता अल्लाह	उसे अल्लाह ने दिया	उस में से जो	तो उसे ख़र्च करना चाहिए	उस का रिज़्क़	उस पर	तंग कर दिया गया

سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝٧ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ ع ١ ٧ ١٧

से	उन्हों ने सरकशी की	बस्तियां	और कई	7	आसानी	तंगी के बदले	जल्द कर देगा अल्लाह

اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨

8	बहुत बड़ी	अ़ज़ाब	और हम ने उन्हें अ़ज़ाब दिया	सख़्ती से	हिसाब	तो हम ने उन का हिसाब लिया	और उस के रसूलों	अपने रब के हुक्म

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ

उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया है	9	ख़सारा	उन का काम	अन्जाम	और हुआ	अपना काम	वबाल	फिर उन्हों ने चखा

عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ مع ١٤ عند المتقدمين ١٢

ईमान वालो	ऐ अ़क़्ल वालो	पस तुम डरो अल्लाह से	सख़्त	अ़ज़ाब

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ

रोशन	अल्लाह की आयतें	तुम पर	वह पढ़ता है	रसूल	10	नसीहत (किताब)	तुम्हारी तरफ़	तहक़ीक़ नाज़िल की अल्लाह ने

لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَمَنْ

और जो	नूर की तरफ़	तारीकियों से	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	जो ईमान लाए	ताकि वह निकाले

يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	अच्छे	और वह अ़मल करेगा	अल्लाह पर	ईमान लाएगा

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝١١ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ

पैदा किए	अल्लाह वह जिस ने	11	रोज़ी	उस के लिए	बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने	हमेशा हमेशा	उन में	वह हमेशा रहेंगे

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا

ताकि वह जान लें	उन के दरमियान	हुक्म	उतरता है	उन की तरह	और ज़मीन से (भी)	सात आस्मान

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝١٢ ع ٢ ٥ ١٨

12	इल्म से	हर शै	अहाता किया हुआ है	और यह कि अल्लाह	क़ुदरत रखता है	हर शै पर	कि अल्लाह

آيَاتُهَا ١٢ ❀ سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ (٦٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2	(66) सूरतुत तहरीम हराम करना	आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ

खुशनूदी	चाहते हुए	तुम्हारे लिए	जो अल्लाह ने हलाल किया	तुम क्यों हराम ठहराते हो?	ऐ नबी (स)

اَزْوَاجِكَ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١) قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ

खोलना (कफ़्फ़ारा)	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने	1	मेह्रबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	अपनी बीवियों

اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (٢) وَاِذْ

और जब	2	हिक्मत वाला	जानने वाला	और वह	तुम्हारा कारसाज़	और अल्लाह	तुम्हारी क़समें

اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ

और उस को ज़ाहिर कर दिया	उस ने ख़बर कर दी उस बात की	फिर जब	एक बात	अपनी बीवी	बाज़ (एक)	तक- से	नबी (स) ने राज़ की बात कही

اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

वह बात	उस (बीवी) को जतलाई	फिर जब	बाज़ से	और एराज़ किया	उस का कुछ	उस (नबी) ने ख़बर दी	उस पर	अल्लाह

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ (٣) اِنْ تَتُوْبَاۤ

अगर तुम दोनों तौबा करो	3	ख़बर रखने वाला	इल्म वाला	मुझे ख़बर दी	फ़रमाया	इस	किस ने आप (स) को ख़बर दी	वह बोली

اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उस पर	तुम एक दूसरी की मदद करोगी	और अगर	तुम्हारे दिल	तो यक़ीनन कज हो गए	अल्लाह के सामने

هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद (उन के अ़लावा)	और फ़रिश्ते	मोमिन (जमा)	और नेक	और जिब्राईल (अ)	उस का रफ़ीक़	वह

ظَهِيْرٌ (٤) عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا

बेहतर	बीवियां	कि उन के लिए बदल दे	अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें	उन का रब	क़रीब है	4	मददगार

مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۗىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰۗىِٕحٰتٍ

रोज़ेदार	इबादत गुज़ार	तौबा करने वालियां	फ़रमांबरदारी करने वालियां	ईमान वालियां	इताअ़त गुज़ार	तुम से

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا (٥) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ

और अपने घर वालों को	अपने आप को	तुम बचाओ	ईमान वालो	ऐ	5	और कुंवारियां	शौहर दीदा

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰۗىِٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

ज़ोर आवर	दुरुश्त ख़ू	फ़रिश्ते	उस पर	और पत्थर	आदमी	उस का ईंधन	आग

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (٦)

6	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह करते हैं	वह हुक्म देता है उन्हें	जो	वह नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (1)
तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। (2)
और जब नबी (स) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी स) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा बीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस बीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमायाः मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। (3)
(ऐ बीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यक़ीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) की (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो बेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अ़लावा मददगार हैं। (4)
अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियां बदल दे तुम से बेहतर इताअ़त गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांबरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। (5)
ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त ख़ू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअ़य्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक्म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (6)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا

ऐ	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	तुम उज़्र न करो	आज	इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ ع ١ ٧ ١٩

तुम करते थे	7	ऐ	ईमान वालो	तुम तौबा करो	अल्लाह के आगे	तौबा	ख़ालिस

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

उम्मीद है	तुम्हारा रब	कि वह दूर कर देगा	तुम से	तुम्हारी बुराइयां (गुनाह)	और वह दाख़िल करेगा तुम्हें	बाग़ात	जारी हैं

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ

उन के नीचे	नहरें	उस दिन	रुस्वा न करेगा अल्लाह	नबी (स)	और जो लोग ईमान लाए	उस के साथ

نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

उन का नूर	दौड़ता होगा	उन के सामने	और उन के दाहिने	वह कहते (दुआ करते) होंगे	ऐ हमारे रब	पूरा कर दे हमारे लिए

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ

हमारा नूर	और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमादे	बेशक तू	पर	हर शै	क़ुदरत रखने वाला	8	ऐ नबी (स)	जिहाद कीजिए

الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ

काफ़िरों	और मुनाफ़िक़ों	और सख़्ती कीजिए	उन पर	और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरी

الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ

जगह	9	बयान की अल्लाह ने	मिसाल	काफ़िरों के लिए	नूह (अ) की बीवी

وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ

और लूत (अ) की बीवी	दो सालेह	हमारे बन्दे	से	दो बन्दे	मातहत	दोनों थें

فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ

सो उन्हों ने उन दोनों से ख़ियानत की	तो उन दोनों के काम न आया	उन के	अल्लाह से-आगे	कुछ	और कहा गया	तुम दोनों दाख़िल हो जाओ जहन्नम

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ وقف لازم

साथ	दाख़िल होने वाले	10	और बयान की अल्लाह ने	मिसाल	मोमिनों के लिए	फ़िरऔन की बीवी

اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ

जब	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मेरे लिए बना दे	अपने पास	एक घर	जन्नत में	और मुझे बचा ले	से

فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ ۙ وَمَرْيَمَ

फ़िरऔन	और उस का अ़मल	मुझे बचा ले	से	ज़ालिमों की क़ौम	11	और मरयम

ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

इमरान की बेटी	वह जिस ने	हिफ़ाज़त की	अपनी शर्मगाह	सो हम ने फूंकी	उस में	अपनी रूह से

وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ۧ ع ٢ ٥ ٢٠

और उस ने तस्दीक़ की	बातों की	अपना रब	और उस की किताबों	और वह थी	से	फ़रमांबरदारी करने वालियां	12

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो ख़ालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगे: ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (8)

ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर सख़्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9)

बयान की अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह (अ) की बीवी और लूत (अ) की बीवी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्हों ने अपने शौहरों से ख़ियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (10)

और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल पेश की, जब उस (बीवी) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िरऔन और उस के अ़मल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचा ले। (11)

और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफ़ाज़त की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रुह फूंकी, और उस ने तस्दीक़ की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमांबरदारी करने वालियों में से थी। (12)